हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

8 Test

टेस्ट-IV (प्रश्नपत्र-2)

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (J-S)–M–HL4

Name: Rajesh Kumar Meena **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** IP-19/1240

Center & Date: Mukherjee Nagar **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 1118307

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित गद्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके रचनात्मक सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) इस नयी सभ्यता का आधार धन है। विद्या और सेवा और कुल और जाति सब धन के सामने हेय हैं। कभी-कभी इतिहास में ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब धन को आन्दोलन के सामने नीचा देखना पड़ता है, मगर इसे अपवाद समझिये। मैं अपनी ही बात कहती हूँ। कोई गरीब औरत दवाखाने में आ जाती है, तो घण्टों उससे बोलती तक नहीं, पर कोई महिला कार पर आ गयी, तो द्वार तक जाकर उसका स्वागत करती हूँ। और उसकी ऐसी उपासना करती हूँ, मानो साक्षात् देवी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग → प्रस्तुत गद्यांश हिंदी के उपन्यास सम्राट प्रेमचंद की कालजयी रचना 'गोदान' से उद्धृत है। इन पंक्तियों में मालती एवं मेहता की बातचीत के माध्यम से पूँजीवादी व्यवस्था के चरित्र को उजागर किया गया है।

व्याख्या → मालती प्रेमेहता से कहती हैं वर्तमान समय में धन ही सब कुछ है और इस पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में धन के सामने विद्या, सेवा, वंश और जाति सब हीन है। हाँ, कभी अपवाद स्वरूप ऐसा हो सकता है कि किसी आंदोलन में धन के सामने अन्य चीजों की महत्ता बढ़ जाये।

आगे मालती ईमानदारी से अपने दृष्टिकोण को स्वीकारते हुए कहती हैं वह भी गरीब मरीजों की तुलना में अमीर मरीजों पर विशेष ध्यान देती हैं और उन्हें विशेष

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आदर देती है।

विशेष :- (i) इन पंक्तियों में प्रेमचंद ने पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के वास्तविक चरित्र को उजागर किया है।

(ii) पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में सामाजिक संबंधों की तुलना में धन की बढ़ती भूमिका को बताया गया है तो वर्तमान ~~पूँजी~~ उपभोक्तावादी युग में अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है।

(iii) अमीर एवं गरीब व्यक्ति के बीच होने वाले भेदभाव का वर्णन किया गया है।

(iv) भाषा सहज, सरल एवं बोधगम्य है। यही प्रेमचंद की जनसाधारण एवं हिंदुस्तानी भाषा है।

(v) सूत्रात्मक शैली का सुंदर प्रयोग, जैसे- 'इस नयी सभ्यता का आधार धन है।'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) लेकिन धरती माता अभी स्वर्णांचला है! गेहूँ की सुनहली बालियों से भरे हुए खेतों में पुरवैया हवा लहरें पैदा करती है। सारे गाँव के लोग खेतों में हैं। मानो सोने की नदी में, कमर-भर सुनहले पानी में सारे गाँव के लोग क्रीड़ा कर रहे हैं। सुनहली लहरें!! ताड़ के पेड़ों की पंक्तियाँ झरबेरी का जंगल, कोठी का बाग, कमल के पत्तों से भरे हुए कमला नदी के गड्ढ़े! डॉक्टर को सभी चीजें नई लगती हैं। कोयल की कूक ने डॉक्टर के दिल में कभी हूक पैदा नहीं की। किंतु खेतों में गेहूँ काटते हुए मजदूरों की 'चैती' में आधी रात को कूकनेवाली कोयल के गले की मिठास का अनुभव वह करने लगा है।

संदर्भ एवं प्रसंग → प्रस्तुत गद्यावतरण ~~प्रगतिवादी~~ आँचलिक उपन्यासधारा के प्रतिनिधि उपन्यासकार 'यशपाल' की प्रसिद्ध ~~ऐतिहासिक~~ आँचलिक उपन्यास 'मैला आँचल' से उद्धृरित है। इन पंक्तियों में डॉ. प्रशांत की मेरीगंज गाँव एंव ग्रामीण प्रकृति के बारे में मनःस्थिति का वर्णन किया गया है।

व्याख्या → डॉ. प्रशांत मेरीगंज मे रहते हुए ग्रामीण प्रकृति की मनोरमता को महसूस करने लगा है। लेखक कहता है धरती माँ अभी भी सुनहरे आँचल के रूप में सभी का पेट भरती है। खेतों में किसान काम रहे है तथा गेहूँ की सुनहरी बालियाँ लहलहा रही है। प्राकृतिक दृश्यों में कमला नदी, ताड़ के पेड़, कोठी का बाग, कमल के पत्ते, कोयल की कूक भी डॉ प्रशांत को अब नया अनुभव देने लगी है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अब चैत की आधी रात के समय किसानों को के द्वारा गेहूँ काटते समय कोयलों द्वारा निकलने वाली आवाज मधुर महसूस होने लगी है।

विशेष :- (i) 'आँचलिक उपन्यास' के रूप लेखक द्वारा अंचल के प्राकृतिक वर्णन से आँचलिकता और समृद्ध हो जाती है तथा पाठक वहाँ के प्राकृतिक वातावरण में डूब जाता है।

(ii.) लेखक ने स्थानीय भाषा के बजाय 'मानक भाषा' का प्रयोग किया है जिसने उपन्यास के कथ्य को व्यक्त करने में खूबसूरती बढ़ायी है।

(iii) हमारे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में धरती को माँ का दर्जा दिया जाता है जो अपने उत्पादन द्वारा सभी का माँ तरह पालन-पोषण करती है।

(iv) विराम चिन्हों और विस्मयादिबोधक चिह्नों का सुंदर प्रयोग किया गया है।

(v) लेखक ने प्रकृति को वैज्ञानी दृष्टि की बजाय सहज एवं अनुभूतिपूर्ण दृष्टि से देखा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हमारा सृष्टि-संहार-कारक भगवान् तमोगुणजी से जन्म है। चोर, उलूक और लंपटों के हम एकमात्र जीवन हैं। पर्वतों की गुहा, शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क और खलों के चित्त में हमारा निवास है। हृदय के और प्रत्यक्ष, चारों नेत्र हमारे प्रताप से बेकाम हो जाते हैं। हमारे दो स्वरूप हैं, एक आध्यात्मिक और एक आधिभौतिक जो लोक में अज्ञान और अंधेरे के नाम से प्रसिद्ध हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग → प्रस्तुत पंक्तियाँ भारतीय नवजागरण के प्रसिद्ध नाटककार 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' के प्रसिद्ध ~~सामाजिक~~ नाटक 'भारत दुर्दशा' से अवतरित है। इन पंक्तियों में भारत के दुश्मन के रूप में अंधकार अपनी विशेषताओं का वर्णन कर रहा है।

व्याख्या → अंधकार कहता है वह सृष्टि के विनाशकर्ता भगवान तमोगुण के वंशज है। चोर, उल्लू और बदमाश अँधेरे में ही सक्रिय होते है। उसका निवास स्थान पर्वतों की गुफा, मूर्खों के दिमाग एवं दुष्टों के मन है। अँधेरे की उपस्थिति में हृदय एवं आँखों को कुछ नहीं सूझता है। अँधेरा कहता है कि वह दो रूपों में आध्यात्मिक रूप में अज्ञान एवं आधिभौतिक रूप में अँधेरे के नाम से पहचान रहता है। इस प्रकार वह भारत के विनाश में अपना योगदान देता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

विश्लेषण →

(i) लेखक ने भारत की दुर्दशा के वर्णन के क्रम में अज्ञान रूप अँधेरे के माध्यम से 'अज्ञान' की भूमिका का वर्णन किया गया है।

(ii) अँधेरा का दूसरा अर्थ अज्ञान भी है तथा जो ज्ञान रूपी प्रकाश की अनुपस्थिति में पैदा होता है।

(iii) इस अज्ञान एवं अंधेरे में ही ही असामाजिक एवं अनैतिक तत्वों का बोलबाला होता है। कानून की दुर्दशा की स्थिति में कहा भी जाता है कि 'अंधा कानून है' अर्थात कानून के सामने भी अँधेरा व्याप्त है।

(iii) भाषा तत्समी होते हुए भी सहज, सुबोध एवं प्रवाहमयी है।

(iv) लेखक ने व्यंग्य के प्रभावी उपयोग के माध्यम से तत्कालीन भारतीय समाज पर तीक्ष्ण व्यंग्य किया है।

(v) विराम आदि चिह्नों का सुंदर प्रयोग हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) राजनीति साहित्य नहीं है, उसमें एक-एक क्षण का महत्त्व है। कभी एक क्षण के लिये भी चूक जाएँ तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिये व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग → व्याख्येय पंक्तियाँ नवलेखन के दौर के प्रसिद्ध नाटककार 'मोहन राकेश' के प्रसिद्ध नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' से ली गयी हैं। इन पंक्तियों में प्रियंगुमंजरी राजनीति के प्रति कालिदास की उदासीनता के बारे में वर्णन करते हुए मल्लिका से कहती है।

व्याख्या → यहां वे प्रतिनिधि चरित्र मल्लिका प्रियंगुमंजरी मल्लिका से कहती हैं राजनीति एवं साहित्य दो नितांत भिन्न चीजें हैं। राजनीति में प्रत्येक क्षण का महत्व है तथा इसमें थोड़ी सी भी चूक पतन की ओर ले जा सकती है।

राजनीति में व्यक्ति में बहुत सक्रिय एवं जागरूक रहना पड़ता है तभी व्यक्ति इसमें सफल हो पाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष :- (i) नाटक की संवेदना का मूल बिन्दु सत्ता एवं सृजनशीलता का द्वन्द्व इन पंक्तियों में प्रभावी रूप से उभारा गया है।

(ii) राजनीति के प्रति ऐसा ही दृष्टिकोण 'स्कंदगुप्त' में भी दिखता है।

(iii) सत्ता किस प्रकार साहित्यकार की सृजनशीलता का ह्रास करती है यथातथा उपलब्धियों के बावजूद साहित्यकार पुनः उसी क्षेत्र में लौटना चाहता है, जिससे उसे उपलब्धि प्राप्त हुई थी। यह कालिदास की सत्ता के प्रति उदासीनता के माध्यम से दिखाया गया है।

(iv) सत्ता की संवेदनहीनता को त्रियंगुमंजरी के मल्लिका के प्रति दृष्टिकोण से चित्रित किया है।

(v) वर्तमान जटिल राजनीति में ये पंक्तियाँ अत्यंत प्रासंगिक हो जाती हैं।

(vi) नाट्य संवाद की दृष्टि से उत्कृष्ट भाषा शैली।

(vii) सूत्र भाषा का सुंदर प्रयोग 'राजनीति साहित्य नहीं है।'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है! अन्धकार का आलोक से, असत् का सत् से, जड़ का चेतन से, और बाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से संबंध कौन कराती है? कविता ही न!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग → प्रस्तुत पंक्तियाँ हिंदी नाट्येतिहास के शिखर पुरुष 'जयशंकर प्रसाद' की रचना ऐतिहासिक नाटक 'स्कंदगुप्त' से अवतरित है।

जब विदूषक मुद्गल मातृगुप्त को कविकर्म छोड़ने की सलाह देता है तब ये पंक्तियाँ मातृगुप्त कहता है।

व्याख्या → कविता की महत्ता का वर्णन करते हुए मातृगुप्त कहता है कविता इसे मानसिक संतुष्टि प्रदान करती है। कविता सार्थक शब्दों का एक सुंदर चित्र होता है जो अलौकिक भावनाओं से युक्त संगीत की प्रस्तुति करता है।

कविता मनुष्य हृदय पर व्यापक प्रभाव छोड़ती है तथा यह प्रकाश अंधकार का प्रकाश से, असत्य का सत्य से तथा बाहरी जगत का आंतरिक जगत से मेल

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कराती है तथा यह कविता ही है जो अचेतन को चेतन से परिचित कराती है।

विशेष :-

(i) कविता की महत्त्व प्रतिष्ठा की गयी है।

(ii) ऐसा ही भाव आचार्य रामचंद्र शुक्ल के 'कविता क्या है' निबंध में भी दिखता है जहाँ उन्होंने कविता को भावयोग की संज्ञा दी है।

(iii) इन पंक्तियों से 'मातृगुप्त' का भावात्मक पक्ष उजागर होता है।

(iv) तत्समीपूर्ण भाषा आलंकारिकता, लाक्षणिकता के साथ प्रवाहमयता एवं लयात्मकता के रूप में उत्कृष्टता प्रस्तुत करती है।

(v) सूत्रात्मक भाषा का सुंदर प्रयोग द्रष्टव्य है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'नई कहानी' के भीतर अमरकांत के वैशिष्ट्य को 'ज़िंदगी और जोंक' कहानी के आधार पर लक्षित कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. (क) देशकाल, वातावरण और भाषा-शिल्प की दृष्टि से मैला आँचल की समीक्षा कीजिये। 20

मैला आँचल हिंदी की उपन्यास परंपरा का सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास है तथा इसकी प्रसिद्धि का प्रमुख कारण इसके भाषाशिल्प, देशकाल एवं वातावरण योजना में ही निहित है।

देशकाल की दृष्टि से रेणु ने बिहार के पूर्णिया जिले के मेरीगंज की कहानी को दो वर्ष के समय अंतराल (1946 से 1948) के मध्य व्यक्त किया है।

रेणु ने मेरीगंज का भौगोलिक वर्णन इस प्रकार किया है कि पाठक की आँखों में उसका नक्शा खिंच जाता है तथा मेरीगंज सचित्र रूप में पाठक के समक्ष प्रस्तुत हो जाता है जैसे- 'रोहतर स्टेशन से 2 किमी दूर है---'। विभिन्न प्राकृतिक स्थलों का वर्णन,

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आदि।

काल की दृष्टि से कांग्रेस एवं सोशलिस्ट पार्टी के बारे में सूचना, 1942 के आंदोलन, कांग्रेस के मंत्रिमंडल के गठन, आजादी की प्राप्ति एवं गांधीजी के मृत्यु एवं मृत्युबोध के पर्याप्त सूचना मिल जाती है।

वातावरण की दृष्टि से यह उपन्यास समृद्ध है। सामाजिक वातावरण विभिन्न जातियों, टोलों का वर्णन एवं उनके संबंधों का वर्णन प्रमुख है। विशिष्ट रूप से सांस्कृतिक वातावरण इस उपन्यास को समृद्ध बनाता है। इसके स्थानीय संस्कृति का वर्णन समग्रता से मौजूद है जिसमें लोकगीत एवं लोक संगीत वर्णन की बहुलता प्रमुख है जिसे भउजिया के गीत, विवाह के गीत आदि

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपन्यास के हर दूसरे पृष्ठ पर लोकसंगीत नजर आता है जैसे 'डिम, डिमिक, डिमिक'।

इस सांस्कृतिक वातावरण को बनाने भाषा शैली ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है ~~जिसमें~~ जिसके अंतर्गत आंचलिक शब्दों का प्रयोग जैसे -

'तहसीलदार की बेटी जब गमकौआ साबुन से नहाती है तो सारा गाँव गमगम करने लगता है।"

→ विदेशी शब्दों का प्रयोग आंचलिक रूप में, जैसे भैसचरमन (Vice.chairman)

→ ~~आवश्यकता~~ आवश्यकतानुसार मानक भाषा, जैसे, डॉ. प्रशांत का कथन - 'भौतिकवाद, सापेक्षतावाद ... हिंसा से जर्जर प्रकृति रो रही है'

→ लोक संगीत ~~का~~, लोक गीतों की बहुलता,

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हास्य व्यंग्यों का प्रयोग, चेतना प्रवाह शैली का प्रयोग, अंतर्पाठ्यता आदि के साथ संवाद योजना की दृष्टव्य है जैसे -

डॉ. प्रशांत एवं कमली के मध्य संवाद

कमली : तो मैं जानबूझकर बेहोश होता हूँ।

डॉ. : हाँ। , कमली : क्यों ?

डॉ. : तब ही बेहोशी का डॉक्टर आता है।

कमली : डॉक्टर आवे न आवे मेरी बला से।

डॉ. : तो मैं चला।

कमली : हूँ !

इस प्रकार भाषा ने उपन्यास की आंचलिकता में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। हाँ, यह जरूर है कि देशी एवं ग्राम्य शब्दावली देशी भाषा के जानकार के कठिन प्रतीत हो सकती है, फिर भी स्थानीय संस्कृति का जानकार इसमें रम जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'भोलाराम का जीव' कहानी स्वातंत्र्योत्तर भारत की कार्यपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करती है।' - विवेचन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हरिशंकर परसाई द्वारा रचित 'भोलाराम का जीव' कहानी स्वातंत्र्योत्तर भारत की कार्यपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश व्यंग्यात्मक रूप में तीक्ष्णता के साथ करती है।

इस कहानी में भोलाराम नाम के सरकारी कर्मचारी को पेंशन की स्वीकृति के संघर्ष में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, उससे रिश्वत की माँग की जाती है। अंतत: उसकी पेंशन की स्वीकृति के अभाव में उसकी मृत्यु हो जाती है और उसका जीव उस पेंशन की फाइलों में ही अटक जाता है। जिसकी खोज चंद्रगुप्त एवं नारद के माध्यम से की जाती है, जो कार्यपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार की गंभीर समस्या को व्यक्त करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

अकाली कार्यपालिका के बारे में जनमानस में भ्रष्टाचार की छवि बनी रही है तथा कोई भी फाइल बिना रिश्वत के आगे नहीं बढ़ती है।

इसी क्रम में चंद्रगुप्त द्वारा नारद से गरु में निवास स्थान की कमी के बारे में पूछने पर चंद्रगुप्त द्वारा पंचवर्षीय योजनाओं में भ्रष्टाचार, इंजीनियरों के भ्रष्टाचार, ठेकेदारों द्वारा निर्माण कार्य में भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया जाता है, जो कि एक सच्चाई है।

भारत में विभिन्न विकास परियोजनाओं में नेताओं, ठेकेदारों एवं अभियंताओं के मिलीभगत के कारण घटिया गुणवत्ता का सामान इस्तेमाल किया जाता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this spa

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

जिसकी परिणति विभिन्न दुर्घटनाओं के रूप में सामने आती है।

अतएव यह कहानी इसी भ्रष्टाचार की समस्या को व्यंग्य के स्तर पर उजागर करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कविता क्या है' निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की काव्य-दृष्टि पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~हिंदी के नवलेखन के दौर के प्रतिनिधि राजनीतिक उपन्यास~~

'कविता क्या है' निबंध में आचार्य शुक्ल की काव्य दृष्टि निम्न है_

(1) कविता को भावयोग का दर्जा दिया गया है तथा काव्य को लोकमंगलवादी होना चाहिए। इसी क्रम में रस की लोकमंगलवादी व्याख्या की है।

(2) इसमें काव्य का लक्ष्य लोकमंगल की साध्य की अवस्था बजाय लोकमंगल की साधना अवस्था के रूप में अपनाने की बात कही गयी है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

③ मौलिक दृष्टि से अलंकारों को सजावट की बजाय ③ अर्थ की महत्ता की दृष्टि से प्रयोग, कविता में बिम्बों की महत्ता, गुण-वाचक नामों का प्रयोग आदि का प्रयोग, को महत्वपूर्ण बताया है।

इसी क्रम में उन्होंने मौलिक काव्यशास्त्र की रचना की है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित गद्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके रचनात्मक सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) उसकी आंखें बन्द हो गयीं और जीवन की सारी स्मृतियाँ सजीव हो-होकर हृदय-पट पर आने लगीं, लेकिन बे-क्रम, आगे की पीछे, पीछे की आगे, स्वप्न-चित्रों की भाँति बेमेल, विकृत और असम्बद्ध। वह सुखद बालपन आया, जब वह गुल्लियाँ खेलता था और माँ की गोद में सोता था। फिर देखा, जैसे गोबर आया है और उसके पैरों में गिर रहा है। फिर दृश्य बदला, धनिया दुलहिन बनी हुई, लाल चुंदरी पहने उसको भोजन करा रही थी। फिर एक गाय का चित्र सामने आया, बिल्कुल कामधेनु-सी। उसने उसका दूध दुहा और मंगल को पिला रहा था कि गाय एक देवी बन गयी और...।

सेदर्भ एंव प्रसंग → प्रस्तुत गद्यावतरण हिंदी के महान उपन्यासकार प्रेमचंद के महाकाव्यात्मक उपन्यास 'गोदान' से लिया गया है।

उपन्यास के अंतिम में मृत्यु की शैया पर लेटे होरी की मार्मिक मनःस्थिति का वर्णन इन पंक्तियों में किया गया है।

व्याख्या → मौत को समीप आते देख होरी के मन में उसके जीवन की बहुत सी गतिविधियां अनिश्चित क्रम में आती है जो एक-दूसरे से असंबद्ध है तथा सपनों की तरह अनमेल है। इन सुखद स्मृतियों में होरी का सुखद बचपन, उसकी माँ एंव बचपन की यादें, गोबर, दुल्हन के रूप में सजी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

धनिया और गाय कामधेनु के रूप में ~~अपस्थित~~ उपस्थित होती है। वह गाय उसके स्वप्न में देवी बन जाती है।

<u>विशेष</u> :-

(i) प्रेमचंद मनोविज्ञान में सिद्धहस्त थे जो इन पंक्तियों में एक मरणासन्न व्यक्ति के मनोविज्ञान को मार्मिकता एवं अनुभूतिपूर्णता के साथ व्यक्त होने से पता चलता है।

(ii.) भाषा सहज, सरल एवं बोधगम्य है।

(iii) प्रवाहमयता के कारण गद्य में पद्य की सी झलक दिखायी ~~पड़~~ रही है।

(iv) 'गोदान' नाम की सार्थकता के साथ इस ~~उपन्यास~~ समाज की विडंबनापूर्ण स्थिति को अंत में स्वप्न में कामधेनु के रूप में गाय की उपस्थिति से दर्शाया गया है।

(v) विराम आदि चिह्नों का सुंदर प्रयोग हुआ है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) आर्य ! जो तुमसे भय करता है, उससे तुम भी भय करते हो। शक्तिमान का भय सुषुप्त है, शक्तिहीन का जागरित। भय का कारण होने से भय अवश्य होगा। निर्भय वही है, जो भय के कारणों से मुक्त है। तुम्हारी शक्ति से यदि दूसरा भयभीत है तो उसका भयभीत रहना तुम्हारे भय का गुप्त बीज है। अनुकूल भूमि और ऋतु पाने से भय का यह बीज किसी भी समय अंकुरित हो सकता है। आर्य, ऐसी अवस्था में शक्ति अभय का नहीं, भय का ही कारण है। अन्य के भय का और अपने भय का भी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) इसे ले तो जा रहा हूँ, पर इतना कहे देता हूँ, आप भी समझा दें उसे- कि रहना हो तो दासी बनकर रहे। न दूध की, न पूत की। हमारे कौन काम की, पर हाँ, औरतिया की सेवा करे, उसका बच्चा खिलावे, झाड़ू, बुहारु करे तो दो रोटी खाय, पड़ी रहे। पर कभी उससे ज़बान लड़ायी तो खैर नहीं। हमारा हाथ बड़ा ज़ालिम है। एक बार कूबड़ निकला, तो अगली बार प्रान ही निकलेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग → उपर्युक्त पंक्तियाँ नवलेखन दौर के रचनाकार धर्मवीर भारती की 'एक दुनिया समानांतर' कहानी संकलन में संकलित 'गुलकी बन्नो' से ली गयी है।

इनमें गुलकी पति उसको दुबारा अपने पास ले जाने के क्रम में ये बातें कह रहा है।

व्याख्या → विदाई के समय गुलकी का पति गुलकी के अन्य परिजनों से कहता है वह उसे ले जा रहा है, लेकिन इसे समझा देना कि वह दासी की तरह रहे। वह उसे किसी काम की नहीं है। वह केवल उसकी एक दुखती पत्नी एवं बेटे की सेवा करें और घर का काम कर चुपचाप पड़ी रहे। यदि उसने कभी विरोध में आवाज निकाली भी तो उसका दुबारा शारीरिक उत्पीड़न किया जायेगा जिससे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

पहले की तरह दूसरी छुबड़ भी निकल सकती है।

विशेष :-

(i) ~~इस~~ इन पंक्तियों में पितृसत्तात्मक समाज ~~के~~ में स्त्री की मनोदशा का वर्णन किया गया है।

(ii) गुलकी बन्नो पति की क्रूरता का किस प्रकार शिकार होती है तथा उसके बाद भी वह पति के घर को अपना आश्रय मानती है, यही पितृसत्तात्मकता के अंतर्गत स्त्री के अनुकूलन होना बताया गया है।

(iii) नयी कहानी की स्त्रियों जैसे 'एक और ज़िंदगी' की 'बीना' और 'टूटना' की 'लीना' के विपरीत शोषित नारी का दूसरा पक्ष यहा देखने को मिला है जो 'नयी कहानी' के दृष्टिकोण से कुछ अलग है।

(iv) भाषा सहज, सरल एवं बोधगम्य होने के साथ पात्रानुकूल है।

(v) विरामादि चिह्नों का सुंदर प्रयोग दृष्टव्य।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मनं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग → व्याख्येय पंक्तिया ~~प्रगतिशील~~ प्रगतिवादी उपन्यासधारा के प्रतिनिधि उपन्यासकार यशपाल के प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास 'दिव्या' से उद्धृत है।

जब पृथुसेन दिव्या से विवाह के संबंध अपनी इच्छा अपने पिता प्रेस्थ से प्रकट करता है तो वह अपनी नारी के प्रति वस्तुवादी दृष्टिकोण से ये बात कह रहा है -

व्याख्या → प्रेस्थ कहता है कि पुत्र तुम एक स्त्री के लालच में पड़कर उसके संपूर्ण जीवन के प्रयास को निष्फल कर देना चाहते हो। इसी क्रम में वह चाणिक्य के कथन के माध्यम से कहता है कि स्त्री एक भोग्य पदार्थ है जिसका उपयोग अपने हितों की पूर्ति हेतु किया जाना चाहिए, ना कि एक मूर्ख व्यक्ति की तरह उसके लिए त्याग करने की सोचना चाहिए।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उसके अनुसार बुद्धिमान लोग ऐसी ही स्थितियों के कारण स्त्री को एक महत्वाकांक्षी पुरुष के लिए ◎ पतन का द्वार कहते हैं।

विशेष :- (i) नारी केन्द्रित उपन्यास 'दिव्या' में इन पंक्तियों में प्रेक्ष्य के नारी के प्रति भोगवादी दृष्टिकोण व्यंजित हुआ है।

(ii) वर्तमान उपभोक्तावादी युग में भी नारी को वस्तु का दर्जा दे दिया गया है।

(iii) प्रेक्ष्य द्वारा अपने तर्कों को सही सिद्ध करने के लिए संस्कृत के उद्धरणों एवं बिम्बों के प्रयोग का प्रयोग किया गया है जो नारी के प्रति परंपरा के पक्षपात को दर्शाता है।

(iv) यहाँ मार्क्स के विपरीत दृष्टिकोण दिखाया गया है।

(v) भाषा तत्समी प्रधान होते हुए सरल, सहज एवं सुबोध है।

(vi) विस्मयादि आदि विराम चिह्नों का उचित प्रयोग किया गया है।

(vii) संवाद की दृष्टि से ये पंक्तियाँ अनुचित है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि
The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) सुख और दुख अन्योन्याश्रय हैं। उनका अस्तित्व केवल विचार और अनुभूति के विश्वास में है। इच्छा ही सर्वावस्था में दुख का मूल है। एक इच्छा की पूर्ति दूसरी इच्छा को जन्म देती है। वास्तविक सुख इच्छा की पूर्ति में नहीं, इच्छा से निवृत्ति में है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग → प्रस्तुत गद्यावतरण हिंदी के प्रतिनिधि प्रगतिवादी उपन्यासकार यशपाल की रचना 'दिव्या' से अवतरित है।

इन पंक्तियों में दिव्या के चिंतन को प्रस्तुत किया गया है जो स्थविर चीवुक का दृष्टिकोण है।

व्याख्या → दिव्या सोचती है कि स्थविर चीवुक ही कहते हैं कि सुख और दुख एक दूसरे पर आश्रित हैं। ये केवल विचार एवं अनुभव के रूप में अपना अस्तित्व रखते हैं। किसी चीज की चाहत ही दुखों का प्रमुख कारण है। एक इच्छा दूसरी इच्छा को जन्म देती है तथा इच्छायें अनंत होती हैं। इसी कारण वास्तविक सुख इन इच्छाओं की पूर्ति में नहीं,

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इन इच्छाओं से निपटने में है अर्थात इच्छाओं के त्याग से ही वास्तविक सुख की प्राप्ति हो सकती है।

विशेष :- (i) इन पंक्तियों में बौद्ध दर्शन प्रस्तुत हुआ है जो दुख का मूल कारण इच्छा को मानता है तथा सुख इन इच्छाओं से मुक्त होने को।

(ii) सुख और दुख वास्तविक न होकर एक मनःस्थिति होती है अर्थात व्यक्ति अपने मन को नियंत्रित करके इन पर नियंत्रण कर सकता है।

(iii) वर्तमान उपभोक्तावादी युग में भी मनुष्य मानव असंतोष का मुख्य कारण वर्तमान उपभोक्तावादी दृष्टिकोण है।

(iv) सूत्र भाग का उत्तर प्रयोग, जैसे -
'सुख और दुख अन्योन्याश्रय हैं'।

(v) तत्सती पूर्ण भाषा होने के बावजूद सहज, सुबोध एवं प्रवाहमयी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'गोदान' भारतीय किसान के पूरे जीवन-संघर्ष और इसमें उसके पराभव की करुण गाथा है।' इस कथन के संदर्भ में 'गोदान' का विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'तुलसी साहित्य के सामंत-विरोधी मूल्य' निबंध के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास के रचनाकर्म के प्रति डॉ. रामविलास शर्मा के मत की उपस्थापना कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

डॉ. रामविलास शर्मा एवं आचार्य रामचंद्र शुक्ल की परंपरा के मार्क्सवादी आलोचक एवं रचनाकार हैं। उन्होंने अपने निबंध 'तुलसी साहित्य के सामंत-विरोधी मूल्य' में तुलसीदास के साहित्य के सेवेद्य सामंत विरोधी मूल्यों को पूरे दृढ़ के साथ उजागर किया गया है।

उनका मानना था कि गोस्वामी तुलसीदास का मूल्यांकन श्रद्धावादी और प्रतिक्रियावादी आलोचकों ने सही नहीं किया है जहाँ श्रद्धावादी उन्हें भारतीय संस्कृति एवं समाज का उद्धारक मानते हैं वहीं प्रतिक्रियावादी उन्हें ब्राह्मणवादी मूल्यों का पोषक। रामविलास शर्मा ने ऐतिहासिक सामाजिक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में तुलसीदास का मूल्यांकन करते हुए उन्हें भारतीय नवजागरण का सर्वश्रेष्ठ कवि बताया है तथा कहा है कि वही सर्वश्रेष्ठ कवि होता है जो अपनी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भारतीय संस्कृति को मजबूत करता है।

तुलसीदास के वर्णव्यवस्था के विरोध में होने के संबंध में वे कहते हैं उन्होंने इसका विरोध किया है जैसे -

'धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूत कहौ, जुलाहा कहौ कोई।

* × × * * ×

माँग के खैबो, मसीत को सोइबो, लैबे को न एक दैबे को दोउ।'

और जहाँ पर वे वर्णव्यवस्था के समर्थन में लिखते हैं, ऐसे कथन वर्णव्यवस्था के समर्थक पुरोहितों द्वारा थोपे गये हैं।

शर्मा जी के अनुसार तुलसीदास जी ने समावेशी सामाजिक व्यवस्था का प्रतिपादन किया है। उन्होंने राम के माध्यम से समाज के निम्न व आदिम आदिवासियों के प्रति जो स्नेह प्रकट किया है, वे इसी सोच का प्रतीक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कहीं-कहीं तो शर्मा जी तुलसी को निम्न वर्गों का पक्षधर होने की बात कहते हैं क्योंकि राम के माध्यम से उन्होंने 'भरत सम भ्राता' निम्न वर्ग के व्यक्तियों के लिए कहा है।

शर्मा जी के अनुसार स्त्री पराधीनता के प्रति संवेदनशीलता दिखाने वाले प्रथम हिंदी कवि तुलसी ही थे जो-

"कत विधि सृजी नारि जग माही
पराधीन सपनेहु सुख नाही।" के माध्यम से स्त्री पराधीनता की वेदना को प्रस्तुत कर रहे हैं तथा पुरुषों के लिए एक नारिव्रत बात कहने वाले प्रथम कवि वे ही थे, जैसे,

"एक नारिव्रत रत सब झारि,
ते मन बच क्रम पति हितकारी।"

शर्मा जी के अनुसार तत्कालीन राजनीति में सामंतवादी मूल्यों के विरोध के संबंध में तुलसी ने अपनी भावना प्रकट की

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है, जैसे -

"जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी
ते नृप नरक अवस अधिकारी।"

तुलसीदास का बचपन घोर गरीबी मे बीता था अतः उनके साहित्य गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी जैसी ठोस भौतिक समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही तुलसी ने जगत की प्रत्यक्षता को स्वीकारते हुए वास्तविक समस्याओं के समाधान की बात की है। इस दृष्टि से तुलसीदास इहलोक की समस्याओं के समाधान की बात करते है।

तुलसीदास ने राम को भारतीय जाति का प्रतिनिधि चरित्र बनाया है जिसमें भारतीय संस्कृति के गौरव करने वाले सभी तत्व मौजूद है।

इस प्रकार समग्र रूप से शर्मा जी के अनुसार तुलसी के साहित्य सामंत विरोधी मूल्य सघन रूप से मौजूद है। इसी कारण वे भारतीय नवजागरण के सर्वश्रेष्ठ कवि है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति' दलित-प्रश्न को उठाने में कहाँ तक सफल सिद्ध हुई है? विवेचनात्मक उत्तर दीजिये। 15

प्रेमचंद ने अपनी कहानी 'सद्गति' ने दलित जीवन का संवेदनापूर्ण चरित्र चित्रण किया है जो उनकी दलित जीवन के प्रति दृष्टि को प्रस्तुत करता है।

इस कहानी में प्रेमचंद ने दलित दुखी चमार के ब्राह्मण परिवार के शोषण के माध्यम से ब्राह्मणवादी व्यवस्था के क्रूर पाखंड को कई स्तरों पर उजागर किया गया है।

ब्राह्मणवादी सामाजिक व्यवस्था में ऊँची जातियों द्वारा निम्न वर्गों के श्रम का मूल्य होता है, यह दुखी के शोषण के द्वारा उजागर करते हुए बताया है कि पंडित दुखी को दिनभर सूखे रखकर श्रम करवाता है तथा उसे पीने का पानी तक नहीं देता है।

इसी प्रकार ब्राह्मणवादी सामाजिक

क्रपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
क्रपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

व्यवस्था से दलित वर्ग में घर की गयी हीनता ग्रंथि को भी इसमें स्पष्ट किया गया है जिसमें दुखी ~~बमार~~ सोचता है कि आग के अंगारे अपने सिर पर पड़ने के बावजूद सोचता है कि 'यह ब्राह्मण के घर को अपवित्र करने का फल है।'

इसी प्रकार इस व्यवस्था के प्रति वर्णित करते हुए दुखी सोचता है कि 'और सबके रुपये मारे जाते हैं, लेकिन कोई ब्राह्मणों का मार कर तो देख! पाँव गल गल कर गिरने लगे।'

इस कहानी में प्रेमचंद दलित जीवन में व्याप्त गरीबी का चित्रण किया है कि किस प्रकार दलित व्यक्ति विभिन्न बुनियादी सुविधाओं से वंचित होता है।

दुखी के लाश को ठिकाने लगाने के क्रम पंडित के पाखंड को उजागर को।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

प्रेमचंद ने तीक्ष्णता के साथ उजागर किया है जिसमें दलित व्यक्तियों के प्रति उच्च वर्ग की घृणा, पुलिस व कानून का डर न होना, पाखंड व दिखावा आदि का निरूपण है।

प्रेमचंद इस कहानी में केवल दलित जीवन के चित्रण तक सीमित न रहे है अपितु दलितों में उभरती हुए संघर्ष चेतना को प्रस्तुत किया है।

~~इस 'सद्गति'~~ दुखी की मृत्यु के बाद गोंड़ के कथन एवं दुखी के परिवार के विरोध के द्वारा दलित संघर्ष चेतना के बीज प्रस्फुटित होते दिखाई देते है।

समग्र रूप से 'सद्गति' कहानी में प्रेमचंद दलित प्रश्न को उठाने में अत्यधिक सफल हुई है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'स्कंदगुप्त' नाटक के नामकरण पर विचार कीजिये। 15

स्कंदगुप्त' नाटक के नामकरण पर विचार करने के संदर्भ में हमे पहले उन कसौटियों को प्रस्तुत करना होगा जो कि एक अच्छे नामकरण का आधार हो सकती हैं। इन कसौटियों के अंतर्गत -

(i) अच्छे नाम के द्वारा रचना का प्रतिपाद्य समग्रता द्वारा प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

(ii) नाम संक्षिप्त एवं सारगर्भित होना चाहिए।

(iii) अन्य नामों से तुलनात्मक दृष्टि से श्रेष्ठ होना चाहिए।

जयशंकर प्रसाद " स्कंदगुप्त नाटक के माध्यम से राष्ट्रीय-सांस्कृतिक नवजागरण के उद्देश्यों की प्राप्ति के साथ अप्रत्यक्ष रूप से तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित भी करना चाहते थे। इस दृष्टि से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस चरित्र प्रधान नाटक ऐसा चरित्र जिसने विदेशी ~~आक्रांताओं~~ को (हूणों) को पराजित किया हो, के आधार पर नामकरण सही प्रतीत होता है। 'स्कंदगुप्त' चरित्र से नाटक की अन्य संवेदनाएँ भी जुड़ी हैं जिसमें प्रसाद के दृष्टिकोण 'समरसतावाद' की प्राप्ति का लक्ष्य भी 'स्कंदगुप्त' के माध्यम से पूरा होता दिखाई देता है। इस ~~प्रक~~ आधार 'स्कंदगुप्त' नाम रचना के प्रतिपाद्य को व्यक्त करने में सक्षम है तथा यह नाम संक्षिप्त भी है।

यदि इसका नामकरण '~~स्कंद~~ स्कंदगुप्त' न रखा जाता ~~है~~ तो ~~अन्य~~ इस चरित्र प्रधान नाटक अन्य प्रमुख चरित्र 'देवसेना' के आधार पर इसका नाम रखा जा सकता है। लेकिन इस नामकरण में समस्याएँ यह है कि ~~प्रेमक~~ प्रसाद के द्वारा राष्ट्रीय चेतना की संश्लिष्ट एवं जटिल संवेदनात्मक

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रस्तुति स्कंदगुप्त के माध्यम से की गयी है, जो देवसेना के नामकरण माध्यम से पूर्ण नहीं हो पाती। देवसेना के समाज एवं राष्ट्र के संबंध में कोई बड़े उद्देश्य नहीं है। इस कारण राष्ट्रीय चेतना का यह पक्ष इस नामकरण से संकीर्ण हो जाता है। इसके साथ ही इस नाटक को ऐतिहासिकता प्रदान करने का उद्देश्य का भी पूर्ण नहीं हो पाता जो कि ऐतिहासिक चरित्र के नाम से ही संभव है।

इसी प्रकार कोई स्थिति विशेष नामकरण जैसे 'हूणों की पराजय' या 'कुंभा की हार' भी एक पक्षीय होने के कारण उचित प्रतीत नहीं होते है।

अतः निष्कर्ष रूप में अच्छे नामकरण की सभी कसौटियों एवं नाटक के प्रतिपाद्य को संपूर्णता में व्यक्त करने के कारण 'स्कंदगुप्त' नामकरण सर्वश्रेष्ठ है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'अपने उपन्यासों एवं कहानियों में प्रेमचंद की बुनियादी चिन्ताएँ अपने समय की भी हैं और भविष्य की भी हैं।' इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

एक महान उपन्यासकार एवं कथाकार के रूप मे प्रेमचंद की दृष्टि एकआयामी न होकर बहुआयामी होकर वर्तमान के साथ भविष्य को चित्रित करने में सफल रही है। इस दृष्टिकोण को प्रेमचंद के उपन्यास एवं कहानियों में प्रमुख रूप से देखा जा सकता है।

इनमें उन समस्याओं को उजागर किया गया है जो न केवल उस समय का सामाजिक यथार्थ बल्कि वर्तमान में भी समाज को प्रभावित कर रही है। गोदान एवं कर्मभूमि उपन्यास में चित्रित कृषकों की पराभव की करुण गाथा आज विकराल रूप में मौजूद है। भारत में आज प्रतिवर्ष हजारों किसान आर्थिक संकटों के कारण आत्महत्या कर रहे है। इसी प्रकार गोदान उपन्यास में अन्य समस्याएँ जैसे सामंती व्यवस्था से पूँजीवादी व्यवस्था

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मे रूपांतरण तथा रंगभूमि के औद्योगीकरण की ~~समस्या~~ समस्या आज पूँजीवाद, औद्योगीकरण एवं उपभोक्तावाद के रूप मे गंभीर रूप से मौजूद है जहाँ बढ़ती आर्थिक विषमता, विस्थापन एवं श्रमिकों का शोषण जैसी गंभीर चुनौतियाँ विद्यमान है।

~~इसी प्रकार~~ गोदान उपन्यास को प्रेमचंद द्वारा रचित महागाथा माना जाता है जिसमें सभी पूर्ववर्ती कहानियाँ एवं उपन्यास आकलित हो जाते है जो इनमे वर्णित समस्याओं के क्रम में भी दिखता है जो सांप्रदायिकता की समस्या, दहेज की समस्या, अनमेल विवाह की समस्या, बेगार की समस्या, धार्मिक आडंबरवाद आदि, वृद्धों की समस्या, वेश्यावृत्ति की समस्या आदि रूप मे मौजूद है।

बूढ़ी काकी एवं अलग्योझा के माध्यम से चित्रित वृद्धों की समस्या आज बड़े स्तर पर

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मौजूद है जो कि ~~बेबई~~ ~~एक~~ गाजियाबाद के समाचारों जिसमे बच्चों द्वारा अपने माँ-बाप को परेशान करने के रूप में सामने आयी है, के रूप में देख सकते है।

~~बाकि~~ गोदान, ~~@~~ निमंत्रण के व्यक्त धार्मिक आडंबरवाद आज अंधविश्वास, साधुओं के द्वारा छल-कपट के रूप मे ~~@@@~~ मौजूद है। सांप्रदायिकता की जो समस्या गोदान मे प्रस्तुत की गयी थी, आज गंभीर रूप ले ना केवल भारत बल्कि विश्व को प्रभावित कर रही है।

इस प्रकार प्रेमचंद सेवासदन के माध्यम से वेश्यावृत्ति की जो समस्या को व्यक्त किया, वो आज मानव तस्करी विशेषकर महिलाओं की तस्करी, 'चाइल्ड पोर्नोग्राफी' के माध्यम से ~~@~~ विकराल रूप में सामने आ रही है।

प्रेमचंद ने गोदान में लोकतंत्र के वास्तविक चरित्र को उजागर किया है, वो आज ~~के~~ लोकतंत्र की भी कमजोरी के रूप मे उपस्थित है जिसमें धनी लोगों का नियंत्रण है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रेमचंद ने ना केवल समस्याओं को ही प्रकट की है, बल्कि कुछ का समाधान भी दिखाया है जैसे मातादीन -सिलिया के माध्यम से दलित समस्या का समाधान, सोना-मथुरा के प्रेम विवाह के माध्यम से दहेज प्रथा का समाधान आदि।

समग्र रूप से प्रेमचंद ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज की जिन समस्याओं का उठाया, वो न केवल उनके समय की बुनियादी चिंताओं को प्रकट करती है, बल्कि भविष्य को भी ध्यान में रखती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'मैला आँचल' के पात्र बावनदास का चरित्र-चित्रण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मैला आँचल का पात्र बावनदास एक सत्यनिष्ठ, देशभक्त एवं ईमानदार कार्यकर्ता है जो सर्वस्वरूप में देश के लिए ही सोचता है तथा अनैतिक कर्मों से निरंतर डरता रहता है।

इस उपन्यास में बावनदास को गाँधीजी का प्रतिरूप बताया गया है जो कि कांग्रेस पार्टी का कार्यकर्ता भी है। वह कांग्रेस पार्टी के सिद्धान्तों के प्रति प्रतिबद्ध है तथा दी गयी जिम्मेदारियों को प्रतिबद्धता के साथ पूरा करने का प्रयास करता है।

इसी क्रम में इन नैतिक सिद्धान्तों के पालन में चरम स्तर पर पहुँच जाता है जो 'जलेबी खाने के प्रसंग'

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मुख्य एवं 'स्त्री के प्रति बुरे विचार के प्रसंग में प्रमुख रूप से व्यक्त होता है।

इसी क्रम में वह अपने नैतिक मूल्यों के लिए अंत तक लड़ता है और अंत: में अपराधी कापरा द्वारा मृत्यु को प्राप्त होता है।

वह देश के लिए कुर्बानी दे देता है तथा देश की समस्या के संबंध में चिंतन शील व्यक्ति है तथा महान नेताओं प्रमुखता गांधी जी एवं नेहरू से अत्यधिक प्रभावित है।

वह जाति के राजनीतिकरण का विरोध भी करता है जैसे 'टोपी की जाति का नाम लिखना' के कथन से पता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

चलता है।

इस प्रकार 'बामनदास' मैला आँचल का एक विशिष्ट चरित्र है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'चिन्तामणि' के निबंधों में प्रौढ़ चिन्तन, सूक्ष्म विश्लेषण और तर्कपूर्ण विवेचन का चरम आदर्श लक्षित होता है। विवेचन कीजिए। 15

निबंध यदि गद्य की कसौटी है तो निबंध की कसौटी है- प्रौढ़ चिंतन, सूक्ष्म विश्लेषण एवं तर्कपूर्ण पूर्ण विवेचन।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिन्दी के प्रमुख निबंधकार थे तथा उनके निबंधों के संकलन 'चिंतामणि' के निबंधों मे निबंधों की उपर्युक्त प्रमुख विशेषताएँ प्रमुख रूप से दिखाई देती है।

शुक्ल जी गंभीर चिंतनशील, ~~मननश~~ मननशील वैज्ञानिक शैली के रचनाकार थे। इसी कारण उनके 'काव्यशास्त्रीय' एवं मनोविकारपरक' निबंधों विशेष रूप से 'कविता क्या है' एवं 'श्रद्धा भक्ति' में उनके चिंतन की परिपक्वता दिखती है जहाँ वे किसी विषय पर चिंतन करते हुए

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उसके संबंध के विचारों के परिपक्व चिंतन के साथ सूत्रात्मक अवधारणा शैली में प्रस्तुत कर देते है जैसे -

~~'प्रेम एवं भक्ति का योग~~

'प्रेम एवं श्रद्धा का योग भक्ति है।'

'कर्म का स्मारक कर्ता से बढ़कर दूसरा कोई नहीं।'

'प्रेम स्वप्न है तो श्रद्धा जागरण।'

इस अवधारणात्मक शैली के पश्चात शुक्ल जी विषय पक्ष का सूक्ष्म विवेचन एवं विश्लेषण करते हुए विभिन्न क्षेत्रों से उदाहरणों का अवगाहन करते है ताकि पाठक को सहज रूप से समझ में आ सके जैसे -

'जब पूज्य भाव के साथ के श्रद्धेय के सामीप्य की प्रवृत्ति विकसित होने लगे * * * * श्रद्धेय के गुण-श्रवण, दर्शन, चिंतन आदि के माध्यम से आनंद प्राप्त होने लगे तो तो

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भक्ति रस का सच्चा समझना चाहिए। इस प्रकार वे 'श्रद्धा एवं प्रेम का योग भक्ति है।' के कथन का सूक्ष्म विश्लेषण करते हैं।

इसके साथ ही 'कविता क्या है' एवं 'श्रद्धा भक्ति' में विभिन्न मनोविकारों की परिभाषा एवं उनमें सूक्ष्म अंतर करने तथा काव्यशास्त्र की मौलिक व्याख्या के क्रम में विभिन्न तर्क प्रस्तुत करते हुए किसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं जिसमें वे संस्कृत शास्त्र, दार्शनिकों एवं कवियों के विचारों के साथ स्वयं के जीवन के उदाहरण के माध्यम से संप्रेषित करते हैं।-

इस प्रकार 'चिंतामणि' के निबंध निबंधों की कसौटी प्रौढ़ चिंतन, सूक्ष्म विश्लेषण एवं तर्कपूर्ण विवेचन का उत्कृष्ट निदर्शन प्रस्तुत करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation